बच्चों के शैक्षिक विकास पर माता-पिता के आर्थिक स्थिति का प्रभाव

उपेन्द्र कुमार
शोधकर्त्ता, शिक्षा संकाय
बी. आर. ए. बिहार विश्वविद्यालय,
मुजफ्फरपुर

सारः
'शिक्षा' दीर्घकालिक और बहुआयामी घटक है – इसलिए इसकी सर्वमान्य परिभाषा संभव नहीं है। रूसों का मानना है कि – "शिक्षा जीवन है। शिक्षा का केन्द्र बालक है। इसलिए शिक्षा का ध्येय व्यकित्व का उत्कर्ष हैं।" महात्मा गाँधी के अनुसार – "शिक्षा से मेरा अभिप्राय बालक तथा प्रौढ़ के शरीर, मन तथा आत्मा में अन्तर्निहित शक्तियों के सर्वागींण प्रकटीकरण से है।" महात्मा गाँधी ने शिक्षा का अर्थ मानव के सर्वोत्कृष्ट गुणों का सर्वांगीण विकास माना है। विवेकानन्द ने कहा है – "मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है।" उनके कथन से यह ज्ञात होता है कि शिक्षा मानव में नैतिकता को विकसित कर उनमें आध्यात्मिकता की भावना जाग्रत करती है, जिससे उसे आत्मज्ञान होता है। टैगोर के शब्दों में – "उच्चतम शिक्षा वह है जो हमें केवल सूचना ही नहीं देती वरन् हमारे जीवन को प्रत्येक अस्तित्व के अनूकूल बनाती है।" डॉ0 राधाकृष्णन् के अनुसार – "शिक्षा को मनुष्य और समाज का निमार्ण करना चाहिए।" उक्त कथन शिक्षा के वैयक्तिक एवं सामाजिक उद्देष्य की ओर संकेत करता है। कर्मयोगी श्री अरविन्द की सम्मति है – "सच्ची तथा वास्तविक शिक्षा केवल वही है, जो मानव की अन्तर्निहित समस्त शक्तियों को इस प्रकार विकसित करता है कि वह उनसे पूर्ण लाभान्वित होता है। यह जीवन को सफल बनाने में सहायता करती है। इसके अतिरिक्त यह शिक्षा जीवन और मनुष्य जाति के मन और उस सम मानवता को मन और आत्मा से, जिसका की वह अंश है, सत्य सम्बन्ध की स्थापना में सहायता देती है।" यहॉ उन्होंने अन्तःकरण को शिक्षा का प्रमुख अंग माना है, जिसके चारो स्तरों – चिन्त, मनस, बुद्धि तथा ज्ञान के विकास पर विशेष बल दिया है।

भूमिका

शिक्षा की परिभाषा

'शिक्षा' दीर्घकालिक और बहुआयामी घटक है – इसलिए इसकी सर्वमान्य परिभाषा संभव नहीं है। अनेक ज्ञानानुशासनों एवं चिन्तन-धाराओं में शिक्षा विषयक अनुचिन्तन हुए है और इसे परिभाषित करने के प्रयत्न भी किये गये हैं।

पश्चिमी विचारक रूसों का मानना है कि – "शिक्षा जीवन है। शिक्षा का केन्द्र बालक है। इसलिए शिक्षा का ध्येय व्यकित्व का उत्कर्ष हैं।" यह परिभाषा व्यापक और सार्थक है क्योंकि जीवन के उन्नयन के लक्ष्य को समेटे हुए है।

पेस्टालॉजी ने शिक्षा को आनतरिकता, क्रियाशीलता एवं संचित अनुभवों के माध्यम से परिभाषित करते हुए कहा है – "शिक्षा हमारी अन्तः शक्तियों का विकास है ऊपर से लादा हुआ ज्ञान नहीं है। वह स्वयं बच्चों की कार्यशीलता तथा उसके अनुभवों का परिणाम है।" अर्थात शिक्षा मनुष्य को उस योग्य बनाने वाली प्रक्रिया है, जिसस से वह ईश्वर द्वारा प्रदत्त शक्तियों का उपयोग करें और समाज का उपयोगी और महत्वपूर्ण सदस्य बने। पेस्टालॉजी ने यही भी कहा है – "शिक्षा मनुष्य की समस्त शक्तियों का स्वभाविक, समरस तथा प्रगतिशील विकास है।" पश्चिमी विचारक जॉन डिवी ने शिक्षा की परिभाषा को और अग्रतर करते हुए कहते हैं – "शिक्षा वह क्रम है जिसमें व्यक्ति शक्तियों पर नियंत्रण प्राप्त करता है और व्यक्तिगत अनुभवों द्वारा सामाजिक उत्कर्ष में सहयोग प्रदान करता है।" यानी शिक्षा आन्तरिक शक्तियों का वांछित विकास है, जिसके बल पर व्यक्ति समाज का उपयोगी सदस्य बनने की गरीमा प्रापत करता है।

पाश्चात्य विद्वानों की भाँति भारतीय विद्वानों ने भी अपने-अपने ढ़ंग से शिक्षा की परिभाषा दी है। महात्मा गाँधी के अनुसार – "शिक्षा से मेरा अभिप्राय बालक तथा प्रौढ़ के शरीर, मन तथा आत्मा में अन्तर्निहित शक्तियों के सर्वागींण प्रकटीकरण से है।" अर्थात उन्होंने शिक्षा का अर्थ मानव के सर्वोत्कृष्ट गुणों का सर्वांगीण विकास माना है। उन्होंने पुनः कहा है "सा विद्या या विमुक्तये", अर्थात जो मुक्ति के योग्य बनाये वह विद्या बाकी सब अविद्या। अतः जो चित्त की शुद्धि न करें, मन और इन्द्रियों को वश में रखना न सिखाए, निर्भयता और स्वावलम्बन पैदा न करे, निर्वाह का साधन न बताए, गुलामी से छूटने और आजाद रहने का हौसला और सामर्थ्य पैदा न करे उस शिक्षा में चाहे जितनी जानकारी का खजाना, तार्किक कुशलता और भाषा-पाण्डित्य मौजूद हो वह शिक्षा नहीं है या अधूरी शिक्षा है। उन्होंने शिक्षा के अर्थ में नैतिकता को प्राथमिकता दी है, जिससे मानव को मुक्ति मिलती है। विवेकानन्द ने कहा है – "मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है।" उनके कथन से यह ज्ञात होता है कि शिक्षा मानव में नैतिकता को विकसित कर उनमें आध्यात्मिकता की भावना जाग्रत करती है, जिससे उसे आत्मज्ञान होता है। फलतः इसी से उसके जीवन में सत्यं, शिवं सुन्दरम का भाव मुखरित होता है। इनकी परिभाषा से एक भाव यह भी ध्वनित होता है कि गॉधी ने मुक्ति के जिस साधन को आध्यात्मिक माना है, उसी को विवेकानन्द ने अन्तर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति माना है। टैगोर के शब्दों में – "उच्चतम शिक्षा वह है जो हमें केवल सूचना ही नहीं देती वरन् हमारे जीवन को प्रत्येक अस्तित्व के अनूकूल बनाती है।" यानी शिक्षा मानव को सूचनाओं की जानकारी के साथ-साथ उसे परिस्थिति के प्रति समायोजन की कला भी सिखाती है। डॉ0 राधाकृष्णन् के अनुसार – "शिक्षा को मनुष्य और समाज का निमार्ण करना चाहिए।" उक्त कथन शिक्षा के वैयक्तिक एवं सामाजिक उद्देष्य की ओर संकेत करता है। कर्मयोगी श्री अरविन्द की सम्मति है – "सच्ची तथा वास्तविक शिक्षा केवल वही है, जो मानव की अन्तर्निहित समस्त शक्तियों को इस प्रकार विकसित करता है कि वह उनसे पूर्ण लाभान्वित होता है। यह जीवन को सफल बनाने में सहायता करती है। इसके अतिरिक्त यह शिक्षा जीवन और मनुष्य जाति के मन और उस सम मानवता को मन और आत्मा से, जिसका की वह अंश है, सत्य सम्बन्ध की स्थापना में सहायता देती है।" यहॉ उन्होंने अन्तःकरण को शिक्षा का प्रमुख अंग माना है, जिसके चारो स्तरों – चिन्त, मनस, बुद्धि तथा ज्ञान के विकास पर विशेष बल दिया है।

उपर्युक्त पाश्चात्य एवं भारतीय विद्वानों की शिक्षा की परिभाषाओं पर दृष्टिपात करने से यह स्पष्ट होता है कि इसकी परिभाषाएँ युगीन परिस्थितियों एवं आवश्यकताओं के आधार पर उनके जीवन-दर्शन की पूर्ण अभिव्यक्ति है। विशेषकर, गाँधी और विवेकानन्द की परिभाषाओं में शिक्षा की व्यापकता समाहित है। क्योंकि इन्होने सर्वांगीण को प्राथमिकता दी है। शिक्षा समाजीकरण का प्रमुख घटक है, जो जीवन में लोगों के समंजन के लिए संजीवनी का काम करती है। व्यक्ति और समाज में पूरक सम्बन्ध है, जहाँ उसकी सारी क्रियाएँ घटित होती है और जहाँ का प्रत्येक प्रौढ़ व्यक्ति शिक्षक की भूमिका निभाता है, अर्थात जिससे व्यक्ति आजीवन शिक्षा ग्रहण करता है।

परिकल्पना

भारतीय समाज आर्थिक दृष्टिकोण से भी तीन वर्गो में विभक्त है। उच्च आय वर्ग, मध्यम आय वर्ग एवं निम्न आय वर्ग। तीनों ही आय वर्गों की मान्याताएँ पृथक-पृथक हैं। तीनो के रहन-सहन, रीति-रिवाज, तौर-तरीके, शिक्षा-दीक्षा ये सभी स्पष्टतया पृथक-पृथक हैं। तीनों ही वर्गो की सुविधाएँ अलग हैं। उच्च आय वर्ग के पढ़ाई-लिखाई एवं उसके तौर-तरीके उन्नत हैं। जबकि मध्यम एवं निम्न आय वर्ग के तौर-तरीके, शिक्षा-दीक्षा, एवं भरण-पोषण की सुविधाएँ अपेक्षाकृत अत्यल्प है। यह वर्ग समाजिक वंचना की स्थिति से गुजरता है। इस तरह तीनों ही वर्गों के सामाजिक समस्याओं के प्रति भी पृथक-पृथक दृष्टिकोण रहते आए हैं। शैक्षिक दृष्टिकोण से माता-पिता एवं बच्चों के बीच जो संबंध पाया जाता है उसका प्रभाव सम्पूर्ण जीवन काल में देखने को मिलता है। 21वीं सदी में आने के बाद भी शिक्षा के क्षेत्र में आज भी बहुत बड़ा अंतर दिखलाई नहीं दे रहा है। शिक्षा के संबंध में तीनों ही समूहों के बीच एक समान दृष्टिकोण नहीं पाया जाएगा। अतः इस पृष्ठभूमि में यह प्राक्कलपना स्थापित किया जाता है कि उच्च आय वर्ग के बच्चे एवं माता-पिता के बीच संबंध मध्यम एवं निम्न आय वर्ग की अपेक्षा अधिक अनुकूल पाया जायेगा। छात्राओं के संदर्भ में भी तीनों ही आय वर्गों के आधार पर यह प्राक्कल्पना स्थापित किया जाता है कि उच्च आय वर्ग के माता-पिता एवं बच्चियों में मध्यम एवं निम्न की अपेक्षा अनुकूल शैक्षणिक विकास पाया जायेगा।

विधि

आर्थिक स्थिति का मापन

वर्त्तमान शोध में लिए गए प्रयोज्यों के आर्थिक स्थिति को मापने के लिए व्यक्तिगत सूचना-पत्र प्रेषित किया गया जिसमें प्रयोज्यों से निम्नलिखित प्रश्न पूछा गया।

आपके परिवार का मासिक आय क्या है?

(क) 5000 से 10,000 के बीच। (ख) 10,000 से 20,000 के बीच (ग) 20,000 से उपर।

प्रयोज्यों को यह निर्देश दिया गया कि उपर अंकित क, ख और ग में से जो आप पर लागू हो रहा हो उसके सामने टिक चिन्ह लगाकर अपना उत्तर दें। इस प्रक्रिया से प्रयोज्यों के पारिवारिक आर्थिक स्थिति का मापन किया गया।

प्रयोज्यों के आर्थिक स्थिति के मापन का यह उद्देश्य था कि वर्त्तमान समाज में सम्पन्न परिवार के सदस्यों का दृष्टिकोण, व्यवहार प्रणाली तथा व्यक्तिगत संरचना निम्न आर्थिक स्थिति के सदस्यों से सर्वथा भिन्न हुआ करता है। शिक्षा के क्षेत्र में यह प्रमुखता के साथ देखने को मिलता हैं सम्पन्न परिवार के बच्चों के पास सभी तरह के संसाधन उपलब्ध होते हैं। जबकि निम्न आर्थिक स्थिति के बच्चों के बीच इसका अभाव पाया जाता है। निर्धन परिवार के सदस्य आधुनिक उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी निर्धनता के परिवेश से दूर नहीं हो पाते हैं। किसी भी सामाजिक समस्या के प्रति उनका व्यवहार प्रणालि संकीर्ण विचारों से घिरा होता है। माता-पिता और बच्चों के बीच जो आपसी संबंध विकसित होता है उसका प्रभाव निश्चित रूप से पड़ता है। बच्चों के विकास में माता-पिता की अहम भूमिका पायी जाती है। आर्थिक स्थिति का प्रभाव किस रूप में पड़ता है इसे देखने के लिए व्यक्तिगत सूचना-पत्र में इसे समाहित किया गया है जिसकी प्रति परिशिष्ट में संलगन है।

प्रतिदर्श

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य शैक्षिक दृष्टि से बच्चे या उसके माता-पिता के बीच संबंध का अध्ययन कतिपय तथ्यों के संदर्भ मे करना अभीष्ट था। अतः यह अध्ययन हाईस्कुल स्तर के एक हजार छात्र एवं छात्राओं के प्रतिदर्श पर किया जा रहा है। ये सभी बच्चें 13 से 16 वर्ष के बीच की आयु वर्ग के होंगे। ये सभी मुजफ्फरपुर जिला अन्तर्गत विभिन्न हाईस्कुलों में अध्ययनरत छात्र-छात्राएँ हैं।

प्रतिदर्श को सर्वथा दोष मुक्त करने के लिए निम्नलिखित सावधानियाँ बरती गई।

(क) प्रतिदर्श में लड़के एवं लड़कियाँ, दोनो को चुना गया।

(ख) प्रतिदर्श में ऐसे ही लड़को का चुना गया जिनकी आयु 13 से 16 वर्ष थी।

(ग) प्रतिदर्श में केवल एक ही शहर, मुजफ्फरपुर को रखा गया। जिस क्षेत्र में काफी संख्या में हाईस्कुल अवस्थित हैं।

(घ) प्रयोज्यों के चयन में यथा संभव किसी भी प्रकार के पूर्वाग्रह को स्थान नहीं दिया गया।

(ड.) प्रतिदर्श में प्रायोज्यों की संख्या 1000 रखी गई जो प्रसामान्य वितरण के सिद्धान्त पर आधारित है।

(च) प्रयोज्यों के चुनाव में यह भी ध्यान रखा गया कि प्रयोज्य छात्रावास/परिवार दोनों ही प्रकार के थे।

(छ) प्रतिदर्श में उच्च, मध्यम एवं निम्न तीनों ही वर्गो के छात्र, छात्राओं को सम्मिलित किया गया।

(ज) प्रतिदर्श में प्रयोज्यों की सामाजिक, आर्थिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए तीन वर्ग समूह एवं तीनों ही आय वर्गों से प्रयोज्यों का चयन किया गया।

प्रतिदर्श को सर्वथा सभी प्रकार के दोषों से मुक्त रखने का यथासंभव प्रयास किया गया।

परिणाम

माता-पिता की आय एवं आर्थिक दृष्टिकोण से संबंधो का तुलात्मक विश्लेषण विभिन्न आय वर्गों को निर्धारित करने के लिए 500 माता एवं उनके बच्चें एवं बच्चियों का शैक्षणिक दृष्टिकोण से संबंध का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। प्रतिदर्श संख्या क्रमशः 500 पर व्यक्तिगत सूचना-पत्र में एक प्रश्नावली देकर उसके आधार पर प्रतिदर्श को तीन वर्गों में विभक्त कर दिया गया – उच्च आर्य वर्ग, मध्यम आर्य वर्ग एवं निम्न आय वर्ग। जिसका विभाजक सीमाएँ क्रमशः उच्च आर्य वर्ग 20000 एवं उससे उपर, मध्यम आय वर्ग 10000 से 20000 के बीच एवं निम्न आर्य वर्ग 5000 एवं उससे उपर निर्धारित की गई।

इन तीनों ही आय वर्गो के माता-पिता एवं उनके बच्चें एवं बच्चियों के बीच शैक्षणिक दृष्टिकोण से संबंध का किस रूप में प्रभाव पड़ता है इससे संबंधित प्राक्कल्पना यहाँ स्थापित की गई है। उच्च आय वर्ग में मध्यम एवं निम्न की अपेक्षा अधिक अनुकूल संबंध पाई जाएगी। प्रतिदर्श में वर्णित 500 माता-पिता एवं उनके बच्चे, बच्चियों को संबंधित तीनों ही आय वर्गों को क्रमशः उच्च आय समूह, मध्यम आय समूह एवं निम्न आय समूह माना गया। तीनों हीं आय समूहों में प्रयोज्यों की संख्या क्रमशः 141, 178, 173 प्राप्त हुआ है। इन तीनों ही समूहों से संबंधित पृथक-पृथक अध्ययन कर प्राप्तांको का वितरण तथा उनके मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा टी॰ अनुपात का तुलनात्मक विवेचन सारणी संख्या 1 एवं 2 में उल्लेखित है।

सारणी संख्या-1

उच्च, मध्यम एवं निम्न आय वर्गो के माता.पिता एवं उनके बच्चों के बीच शैक्षणिक संबंध से प्राप्तांको का तुलनात्मक विवेचनः–

समुह	उच्च समूह	मध्यम समूह	निम्न समूह
संख्या	149	178	173
मध्यमान	148.20	156.73	147.14
प्रमाणिक विचलन	17.49	15.83	20.46
मध्यमानों की प्र0 त्रुटि	1.96	1.51	2.00
मध्यमानों का अंतर	8.55	9.60	1.06
मध्यमानों के अंतर की प्र0 त्रुटि	क–ग 2.76	क–ख 2.50	ख – ग 2.48
टी॰ अनुपात	क–ख 3.89	ख–ग 3.52	क – ग 0.399
सांर्थकता स्तर	0.01	0.08	असार्थक

सारणी संख्या-2

उच्च, मध्यम एवं निम्न आय वर्गो के माता.पिता एवं उनके बच्चियों के बीच शैक्षणिक संबंध से प्राप्तांको का तुलनात्मक विवेचनः–

समुह	उच्च समूह	मध्यम समूह	निम्न समूह
संख्या	209	184	108
मध्यमान	151.695	148.614	146.511
प्रमाणिक विचलन	15.44	16.85	12.67
मध्यमानों की प्र0 त्रुटि	1.30	1.53	2.00
मध्यमानों का अंतर	क–ग 5.184	ख– ग 3.081	क – ख 2. 104
मध्यमानों के अंतर की प्र0 त्रुटि	क–ग 1.98	ख – ग 2.68	ख – ग 2.01
टी0 अनुपात	क–ग 2.98	ख–ग 0.99	क – ख 1.45
सांर्थकता स्तर	0.01	असार्थक	असार्थक

सारणी संख्या 01 एवं 02 में वर्णित तीनों ही आय समुहों के सांख्यिकी की परिणामों के तुलनात्मक विवेचन से यह स्पष्ट हो रहा है की उच्च आर्थिक समुह के माता-पिता एवं उनके बच्चों के बीच शैक्षिक दृष्टिकोण से प्राप्त प्राप्तांको का मध्यमान 148.18 मध्यम समुह से प्राप्त मध्यमान 156.71 और निम्न समूह से प्राप्त मध्यमान 147.14 प्राप्त हुआ है। तीनों ही समुह के पृथक-पृथक तुलना से यह स्पष्ट होता है की उच्च एवं निम्न आय समुहों के बीच मध्यमानों का अंतर 1.06 प्राप्त हुआ है यह नगण्य है। इन दोनो के समुहों के मध्यमानों टी0 अनुपात 3.99 पाया गया है। जो सत्यापित नही हो रहा है। उच्च आय एवं मध्य आय समुह का निम्न आय समुह के साथ क्रमशः 8.55 एवं 9.60 का अंतर पाया गया है। यह अंतर बहुत बड़ा है। जिसके आधार पर उच्च समुह के लिए प्राप्त की अनुपात 3.52 एवं मध्यम आय समुह के लिए प्राप्त की अनुपात 3.89 पाया गया है। जो 320 डी0एफ0 एवं 349 डी0एफ0 के लिए 0.01 पर सार्थक सत्यापित हो रहा है।

माता-पिता एवं उनके बच्चे एवं बच्चियों के साथ शैक्षिक संबंध का उच्च, मध्यम के साथ निम्न तुलनात्मक विवेचन करने पर किसी भी तरह का संबंध स्पष्ट नही हो पाता है।

उपर्युक्त तीनो ही आय समुहो के माता-पिता एवं उनके बच्चों के शैक्षणिक दृष्टिकोण से संबंध का अध्ययन कर निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुआ है।

(क) प्राक्कलपना संख्या 06 में जो प्राक्कलपना की गई है वह सत्यापित हो रही है।

(ख) यह प्रमाणित होता है की निम्न आर्य वर्ग के बच्चों के वनिष्पत मध्यम आय वर्ग के माता-पिता अपने बच्चों के शिक्षा के प्रति अधिक जागरूक दिख रहे हैं।

(ग) मध्यम आय वर्ग में उच्च और निम्न आर्य वर्ग की अपेक्षा बच्चियों से संबंधित मध्यमान अधिक पायें गये हैं जबकी बच्चों से संबंधित मध्यमान भी उसी अनुपात में पाये गये हैं। इससे यह स्पष्ट होता है की उच्च और मध्यम वर्ग के माता–पिता शैक्षिक दृष्टिकोण से अपने बच्चों के साथ अधिक अनुकुल संबंध रखते हैं जिसका शैक्षिक विकास पर अनुकुल प्रभाव पड़ता है।

REFERENCE

1. Andersons H. H. & Brewer J. E. (1946): "Effect of Teacher's Dominative and Integrative contacts on Children's Classroom Behaviour", *Applied Psychology Monographs*, No. 8, 1946
2. Adler, A. (1980): "Individual Psychology", in (ed) Murchison, C., *The Psychologies of 1930*, Worcester, Mass: Clark University Press
3. Amato, Paul R., (1987): Australian Inst. of family studies, Melbourne, Viet, Australia Maternal, Employment; Effects on children's family relationships and development. Australian Journal of Sex, Marriage & Family, (Feb.)
4. Biaggio, Angela (1979): Maternal and Pear Correslates of Moral Judgement of Brazilian Boys, Dec Vol. 135 (2)
5. Brogan, Catherine L. (1972): (Smith Coll. School for Social Work) Changing Perspectives on the Role of Women. Smith College Studies in Social Work (Feb.) Vol. 42(2)
6. Brown, F. J. (1954): Educational Psychology, 2nd ed. Newyork, Prentice Hall.
7. Cameron, James R. (1978): Parental Treatment, Children's Temperament, and the Risk of Childhood Behavioral Problems
8. Cattel R. B. & Eber H. W. (1962): Manual for Sixteen Personality Factors Questionnaire, Institute for Personality and Ability Testing, Champaign Illiniois.
9. Eysenck H. J. (1959): The Manual of the Maudsley Personality Inventory London: University of London Press.
10. Garettee, H. E. (1955): Satisfaction in Psychology and Education (Fourth Edition) Longman, Green & Co., New York.
11. Goode, W. S. & Hatt. P. K. (1952) – Methods in Social Research, New York Mc Grow Hill.
12. Jackowska, Ewa (1977): "Educational Function of the Family of the Socially Adjusted Child". Psychology, Wychowez, Sep-Oct. Vol.- 20 (4)
13. Miller, Scott A. (1986): "Parents' Beliefs about their Children's Cognitive Abilities". *Developmental Psychology*, (Mar), Vol 22(2)
14. Paimer, Sylvia & Cochren, Larry (1988): "Parents as Agent of Career Development", Journal of Counseling Psychology, (Jan) Voll. 35.